B-2
L-20
Ancient History

* शैव धर्म के सम्प्रदाय:-

1. पाशुपत सम्प्रदाय:- प्रवर्तक - लकुलीश [जन्म - कायारोहण पर्वत (गुजरात)]
   - लकुलीश की पुस्तक - पाँचार्थ
   - अनुयायी - पाँचार्थिक

- माधवाचार्य के 'सर्वदर्शन संग्रह' नामक पुस्तक में पाशुपत संप्रदाय का उल्लेख मिलता है।
- इस संप्रदाय के अनुसार, जीव विभिन्न प्रकार के बंधनों से बंधा हुआ है, जिससे मुक्ति शिव की भक्ति के माध्यम से हो सकती है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

2. कश्मीरी शैव सम्प्रदाय:- ज्ञानमार्गी संप्रदाय

↓

दो शाखाएं

- स्पंदशास्त्र
  ↓
  जनक - वसुमित्र
- प्रत्याभिज्ञा
  ↓
  जनक - सोमानंद
  ↓
  अमरनाथ मंदिर इसी शाखा से संबंधित

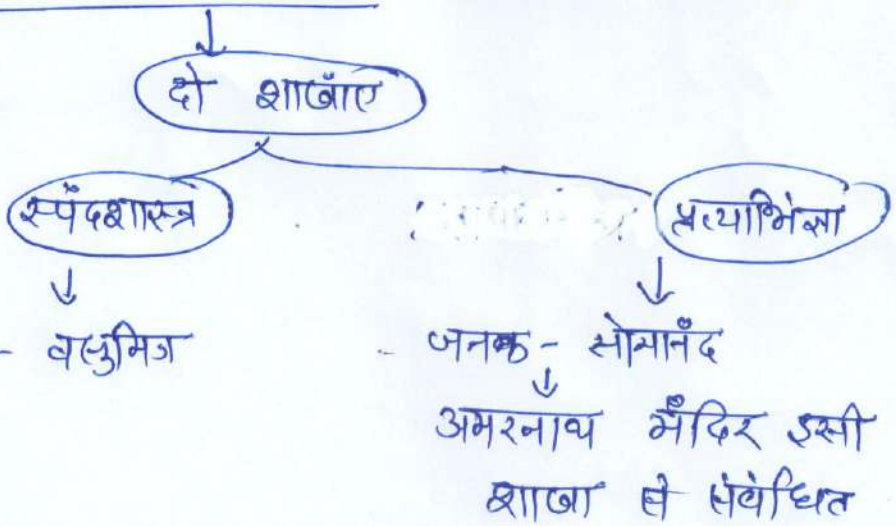

3. कापालिक संप्रदाय एवं कालामुख संप्रदाय:-

- दोनों वाममार्गी संप्रदाय है।
- दोनों संप्रदाय के इष्टदेव भैरव है।
- कापालिक संप्रदाय की चर्चा भवभूतिकृत "मालतीमाधव" में मिलती है। जिसके अनुसार, श्रीशैल पर्वत कापलिकों का प्रमुख केन्द्र था।

→ कालामुख संप्रदाय के लोगों को अवधड़ कहा जाता है।

→ शिव पुराण में कालामुख संप्रदाय के अनुयायियों को महाव्रतधर कहा गया है।

4. लिंगायत / वीरशैव संप्रदाय:-

- 12 वीं सदी में कर्नाटक में लोकप्रिय हुआ।
- इसे जंगम संप्रदाय भी कहा जाता है।
- प्रवर्तक - अल्लभप्रभु
- ग्रंथ - वचनशास्त्र (कन्नड़)
- वचनशास्त्र के लेखक बसव (अल्लभप्रभु के शिष्य) है।
- इस संप्रदाय के लोग लिंग की पूजा करते थे तथा

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

गले में लिंग धारण करते थे।

बसव, कल्चुरी शासक बिज्जल 1 के प्रधानमंत्री थे।

5. नाथ संप्रदाय:- 12 वीं सदी

- संस्थापक - मत्स्येन्द्रनाथ
- स्थान - गोरखपुर
- मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य, बाबा गोरखनाथ ने इस संप्रदाय को लोकप्रिय बनाया।

Note:- वामन पुराण में शैव धर्म के चार संप्रदायों यथा शैव, पाशुपत, कापलिक व कालामुख का उल्लेख मिलता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

दर्शन (600 ई॰पू॰ - 300 ई॰पू॰)

1. नियतिवाद :- प्रवर्तक - मक्खलि गोशाल
   - संबंधित संप्रदाय - आजीवक संप्रदाय
   - सब कुछ पहले से निर्धारित है, इसीलिए करने की आवश्यकता नहीं है।

2. भौतिकवाद :- प्रवर्तक - बृहस्पति
   - लोकप्रिय बनाने का कार्य चार्वाक ने किया
   - चार्वाक का दर्शन → लोकायत (सम्प्रदाय)
   - मनुष्य के जीवन का उद्देश्य समस्त भौतिक सुखों का भोग करना होना चाहिए।

3. अक्रियावाद :- किसी भी प्रकार के कार्य करने की आवश्यकता नहीं है।
   - प्रवर्तक - पूरणकश्यप
   - इस दर्शन के अनुसार, कार्य किसी भी प्रकार के गुण-दोष को निर्धारित नहीं करता।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

4. अशाश्वतवाद:- जनक - पकुध कच्चायन

↳ यह शरीर एवं ब्रह्माण्ड सात तत्वों से मिलकर बना है और अंततः इन्हीं तत्वों में शरीर विलीन हो जाएगा।

5. अज्ञेयवाद:- जनक:- संजयवेठिल पुत्र

↳ अज्ञानता के कारण मनुष्य सोच नहीं पाता।

6. अनिश्चयवाद:- इस संसार में कुछ भी स्थिर। निश्चित नहीं है।

* उपरोक्त सभी दर्शनों के उद्भव को श्रमण आंदोलन कहा गया।

* षडदर्शन:-

दर्शन	प्रवर्तक	पुस्तक
सांख्य	कपिल	सांख्य दर्शन / सांख्यकारिका
योग	पतंजलि	योगसूत्र
न्याय	गौतम	न्यायसूत्र

दर्शन	प्रवर्तक	पुस्तक
वैशेषिक	कणाद / उलूक	—
पूर्व मीमांसा	जैमिनी	—
उत्तर मीमांसा	बादरायण	ब्रह्मसूत्र

- योगसूत्र में तीन गुणों की बात कही गयी है
  सत (तेज), रज, तम
- ये सभी दर्शन आस्तिक दर्शन हैं।
- वैशेषिक दर्शन से भौतिक विज्ञान की उत्पत्ति मानी जाती है।
- सांख्य दर्शन सबसे प्राचीन दर्शन है।
- पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा दर्शन को वेदांत भी कहा जाता है।

KGS IAS

द्वितीय नगरीकरण (600 ई॰पू॰ - 300 ई॰पू॰)

- 1000 ई॰पू॰ बिहार के आसपास के क्षेत्र में लोहे की खोज हुई। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार में लोहे के अधिकाधिक प्रयोग होने से कृषि अधिशेष उत्पन्न हुआ, जिसके फलस्वरूप गैर कृषक गतिविधियों (शिल्पों का विकास) में वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप घुमन्तु जीवन, स्थायी जीवन में परिवर्तित होने लगा तथा क्षेत्रीयता की भावना का विकास आरंभ हुआ और अंततः महाजनपदों के उदय की पृष्ठभूमि बनी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

महाजनपद

→ कुल 16 महाजनपद थे।

महाजनपद	राजधानी
काशी	वाराणसी
कोशल	श्रावस्ती / अयोध्या
अंग	चम्पा
मगध	गिरिव्रज। राजगृह
वज्जि	विदेह / मिथिला
मल्ल	पावा / कुशीनारा
वत्स	कौशांबी
चेदि	शुक्तिमती
कुरु	इन्द्रप्रस्थ
पांचाल	अहिच्छत्र (उत्तरी) व काम्पिल्य (दक्षिणी)
मत्स्य	विराटनगर
सूरसेन	मथुरा
अश्मक	पोटन / पोटली
अवन्ति	उज्जैयिनी (उत्तरी) व महिष्मती (दक्षिणी)
गांधार	तक्षशिला
कम्बोज	हाटक / राजपुर

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

- कुल 16 महाजनपदों में से 15 गंगा घाटी में स्थित थी तथा 1 दक्षिण भारत में स्थित थी।
- महाजनपद → राजतंत्र - मगध, अवन्ति
  → गणतंत्र (10) - वज्जि संघ, पावा के मल्ल
- इन महाजनपदों का उदय बुद्ध के जन्म के पूर्व हो चुका था।
- महाजनपदों के संदर्भ में जानकारी के प्रमुख स्रोत हैं:-
  - भगवती सूत्र (जैन ग्रंथ)
  - अंगुत्तर निकाय (बौद्ध ग्रंथ)
- कोसल, मगध, वत्स और अवन्ति बुद्ध के समय के चार शक्तिशाली राजतंत्र थे।
- बुद्धकाल में सर्वाधिक शक्तिशाली गणराज्य वज्जि संघ (वैशाली के लिच्छवी) था।
- महाजनपद काल में सर्वाधिक शक्तिशाली एवं उत्कृष्ट शासन पद्धति राजतंत्र थी।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

* मगध का उत्कर्ष:-

16 महाजनपदों में मगध के उत्कर्ष के कारण निम्नलिखित हैं:-

⇓

- **भौगोलिक कारक:-**
  मगध तीन तरफ से पहाड़ियों से घिरा हुआ था, जिसके कारण यहाँ विदेशी आक्रमण होना दुर्लभ था।

- **लोहे की खोज:-** राजगीर व आसपास के क्षेत्रों में
  उपयोग - कृषि व हथियार में।

- **प्राकृतिक संसाधन:-**
  जंगल से इमारती लकड़ी तथा सेना हेतु हाथी की उपलब्धता

- **कुशल नेतृत्व:-** बिम्बिसार, अजातशत्रु, शिशुनाग, महापद्मानंद आदि।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

* मगध के राजवंश:-

↓

हर्यक वंश → शिशुनाग वंश → नंद वंश → मौर्य वंश

* हर्यक वंश:-

- 16 महाजनपदों में से एक मगध का एक साम्राज्य के रूप में उत्थान हर्यक वंश के शासन के साथ हुआ।

- बिम्बिसार इस हर्यक वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक था।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

- बिम्बिसार ने अंग को जीतकर मगध में मिलाया और अपने पुत्र अजातशत्रु को वहां का शासक नियुक्त किया।

- मगध की आरंभिक राजधानी गिरिव्रज (राजगृह) थी।

- बिम्बिसार की प्रथम पत्नी कोसलादेवी, कोसल राजा प्रसेनजित की बहन थी तथा दूसरी पत्नी लिच्छवी राजकुमारी चेल्लना थी।

- बिम्बिसार की हत्या अजातशत्रु ने की।
- बिम्बिसार के बाद अजातशत्रु शासक बना।
- अजातशत्रु का एक अन्य नाम कुणिक भी था। इसने राज्य विस्तार की नीति अपनायी तथा काशी और वज्जि संघ को अपने राज्य में मिलाया।
- लिच्छवियो (वज्जि संघ) को पराजित करने के लिए अजातशत्रु ने रथमूसल और महाशिलाकंटक नामक यंत्रों का प्रयोग किया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- अजातशत्रु ने राजगृह की किलेबंदी करवायी।
- अजातशत्रु की हत्या उदयिन द्वारा की गयी।
- अजातशत्रु के बाद उदयिन मगध का शासक बना। इसने गंगा और सोन नदी के संगम पर पाटलिपुत्र (कुसुमपुरा) नामक नयी राजधानी बनाया।
- उदयिन जैनमतावलम्बी थे।
- हर्यक वंश का अंतिम शासक नागदशक था।